रामत देखाडी छे

आ रामतना तमने, प्रगट कहूं प्रकार।
आ भोमना बंध छोडी दऊं, जेम जुओ जोपे करार।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस माया के खेल की हकीकत तुमको बताती हूं। इस भूमि के सांसारिक बन्धनों को छुड़ा देती हूं जिससे तुम्हें इसे अच्छी तरह से देखकर करार मिले।

ए सुपनतणी जे रामत, रची ते अति अख्यात।
मूलबुध बिसरी गई, जाणे सुपन नहीं साख्यात।। २ ।।

यह सपने का खेल है जो अनोखे तरीके से बना है। इसमें अपनी मूल बुद्धि भूल गई है। जिससे लगता है यह सपना नहीं है, साक्षात् है।

पूरूं मनोरथ तमतणां, उघाडूं रामतना बार।
रामत देखाडी करी, करूं सत ना विस्तार।। ३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हारी सब इच्छाएं पूर्ण करती हूं और खेल के दरवाजे खोल देती हूं। माया का खेल दिखाकर तुम्हें सच्चे ज्ञान को विस्तार से समझाऊंगी।

अर्ध साथ रह्यो अटकी, जेणे जोयानो हरख अपार।
स्वांग देखाडी विध विधना, पछे दऊं ते सतनो सार।। ४ ।।

हममें आधे सुन्दरसाथ (तामसी सखी) अटके पड़े हैं। इन्हें खेल देखने की बड़ी चाहना थी। इन्हें तरह तरह के खेल दिखलाकर पीछे सत वस्तु जागृत बुद्धि का ज्ञान दूंगी।

वात सुणो मारा वालैया, साथे दीठां ते दुख संसार।
केम थाय साथ मांहूं मारो, जिहां ऊभी इंद्रावती नार।। ५ ।।

हे वालाजी! मेरी बात सुनो। हमारे सुन्दरसाथ ने माया के दुःख देख लिए हैं। जहां आप की अंगना इन्द्रावती खड़ी हों, वहां मेरा सुन्दरसाथ दुःखी क्यों हो?

तमे वांकी ते वाटे चलविया, विसमां ते केम चलाय।
हूं ग्रही दऊं धाम धणी, तो सुख मूने थाय।। ६ ।।

हे राजजी! आपने इन्हें टेढ़े कर्मकाण्ड वाले रास्ते पर चलाया, परन्तु इस कठिन रास्ते पर इनसे चला नहीं जाता। इनको मैं पकड़कर धाम-धनी से मिलाऊंगी तो मुझे चैन पड़ेगा (सुख होगा)।

हवे जागी जुओ मारा साथजी, रामत छे ब्रह्मांड।
जोपे जुओ नेहेचितसूं, मध्य भरथजीने खंड।। ७ ।।

हे मेरे साथजी! अब जागृत होकर देखो। यह ब्रह्माण्ड एक माया का खेल है। अच्छी तरह से बेफिक्र होकर, भरतखण्ड में इसे देखो।

जिहां वाविए वृख उपजे, जेनों फल वांछे सहु कोय।
बीज जेवुं फल तेवुं, करत कमाई जोय।। ८ ।।

यहां बीज बोने से वृक्ष होता है जिसका फल सब कोई चाहता है। यह बीज जैसा होता है वैसा ही फल होता है, अर्थात् जैसा कोई कर्म करता है वैसा ही फल भोगता है।

Nijanand App

भोम भली भरत खंडनी, जिहां निपजे निध निरमल।
बीजी सर्वे भोम खारी, खारा ते जल मोहजल।। ९ ।।

भरतखण्ड की भूमि उत्तम है (देव भूमि है)। जहां अच्छा-अच्छा ज्ञान उत्पन्न हुआ। पूरा संसार (ब्रह्माण्ड) खारा है (माया में लिपटा है) और मोह सागर में डूबा है।

ऐ मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहेनूं नाम।
उत्तम चौद भवनमां, जिहां वालानो विश्राम।। १० ।।

इस भरतखण्ड के बीच में एक पुरी है जिसका नाम नौतन है, जो चौदह लोकों में उत्तम है, जहां हमारे वालाजी का विश्रामगृह है।

रामत घणू रलियामणी, तमे मांगी मन करी खंत।
विध सर्वे कहूं विगते, जोपे जुओ नेहेचित।। ११ ।।

यह खेल बड़ा सुहावना है। तुमने ही इसे बड़ी चाह करके मांगा है। इसलिए इसकी मैं सारी हकीकत बताती हूं। तुम निश्चिन्त होकर अच्छी तरह से देखो।

रामत जोइए जी, जोवा आव्या छो जेह।
मांगी आपणे धणी कने, आ देखाडे छे तेह।। १२ ।।

तुम जिस खेल को देखने आई हो, उस माया के खेल को देखो। हमने धनी से यही मांगा है और इसे धनी ही दिखा रहे हैं।

मोहोरा ते दीसे सहु जुजवा, अने जुजवी मुखवाण।
स्वांग काछे सहु जुजवा, जाणे दीसंतां प्रमाण।। १३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में अलग-अलग अधिकारी (देवी, देवता, गुरु, ज्ञानी) दिखाई देते हैं। जिनका अलग-अलग ज्ञान है और सभी अलग-अलग रूप बनाए हैं। देखने में ऐसा लगता है कि वही सच्चे हैं।

विध विधना बेख ल्यावे, जाणे रामत निरवाण।
ब्राह्मण खत्री वैस्य सुद्र, मली ते राणों राण।। १४ ।।

यह तरह-तरह से भेष बनाते हैं। यह जानते हैं कि यह खेल का रूप है। इसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा राजा राणा मिले हैं।

मांहोंमांहें सगा समधी, मांहें कुटुंबनो वेहेवार।
हंसे हरखे रुए सोके, चौद विद्या वर्ण चार।। १५ ।।

फिर अन्दर-अन्दर सगे सम्बन्धियों के बन्धन तथा कुटुम्बियों के व्यवहार हैं, जिनसे कभी आनन्द में हंसी आती है, कभी दुःख में रुलाई। ऐसे चार वर्ण के लोग और चौदह विद्याएं हैं।

अठारे वर्ण एणी विधे, लोभे लागा करे उपाय।
विना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माय।। १६ ।।

अठारह वर्ण के लोग भी माया के लोभ का ही उपाय करते हैं। इनके अन्दर काम क्रोध समाता नहीं हैं और इस अग्नि में जल रहे हैं।

Nijanand App

अनेक सेहेर बाजार चौटा, चोक चोवटा अनेक।
अनेक कसवी कसव करतां, हाट पीठ विसेक।। १७ ।।

भरत खण्ड (भारत देश) में अनेक शहर, बाजार, चौराहे-चबूतरे हैं। जिनमें बहुत से धंधे वाले अपना धंधा करते हैं और कहीं-कहीं साप्ताहिक हाट में धंधा करते हैं। यहां कई धर्म-स्थान, कई धर्मपीठ हैं। कई और अड्डे हैं, जहां ज्ञानी लोग अपनी-अपनी दुकान लगाकर बैठे हैं जो अपने शिष्यों को ज्ञान सुनाकर पैसा बटोरते हैं।

स्वांग सर्वे सोभावीने, करे हो हो कार।
कोई मांहें आहार खाधां, कोई खाधा अहंकार।। १८ ।।

इस संसार में सब अपने-अपने ढोंग बनाकर हो-होकार (शोर) करते हैं। इनमें कोई मोह का आहार करते हैं, कोई अहंकार खाते हैं।

कोई मांहें वेहेवारिया, कोई राणा राय।
कोई मांहें रांक रोवंतां, ए रामत एम रमाय।। १९ ।।

इसमें कोई व्यवहार से आते-जाते हैं। कई राणा राजा हैं। कई गरीब रोते फिरते हैं। इस तरह का खेल हो रहा है।

कोई पौढे पलंग कनक ने, कोई ऊपर ढोले वाय।
वातो करतां जी जी करे, ए रामत एम सोभाय।। २० ।।

कोई सोने के पलंग पर लेटते हैं। कोई ऊपर पंखा चलाते हैं और जब वह बातें करते हैं तब कई जी जी करके दौड़ते हैं। इस तरह से इस खेल की शोभा है।

कोई बेसे पालखी, कोई उपाडी उजाय।
कोई करे छत्र छाया, रामत एमज थाय।। २१ ।।

कोई पालकी में बैठते हैं। कोई उठाकर ले चलते हैं। कोई ऊपर से छत्र की छाया करते हैं। इस तरह से यह खेल होता है।

मांहोंमांहें सनमंध करतां, उछरंग अंग न माय।
अबीर गुलाल उडाडतां, सेहेरों मां फेरा खाय।। २२ ।।

कोई आपस में रिश्तेदारी करते हैं। उनके अंग में उमंग नहीं समाती है। अबीर गुलाल उड़ाते हुए शहर में फेरी लगाते हैं।

आभ्रण पेहेरी अस्व चढे, कोई करे छाया छत्र।
कोई नाटारंभ करे, कोई बजाडे वाजंत्र।। २३ ।।

आभूषण पहनकर घोड़े पर चढ़ते हैं। कोई ऊपर से छत्र की छाया करते हैं। कोई सामने नाचते हैं। कोई बाजे बजाते हैं।

कोई सीढी बांधी आवे सामा, करे ते पोक पुकार।
विरह वेदना अंग न माय, पीटे मांहें बाजार।। २४ ।।

कोई मुर्दे की अर्थी लिए आते हैं और सामने चिल्ला-चिल्लाकर रोते हैं। उनके अंग में विरह का दुःख नहीं समाता और सबके सामने छाती पीट-पीटकर रोते हैं।

Nijanand App

देहेन हाथे दिए पोते, रुदन करे जलधार।
सगा सनमंधी सहु-मली, टलवले नर नार।। २५ ।।

अपने ही लड़के रोते-रोते अपने पिता के शरीर को अग्निदाह देते हैं और बांकी सब सगे सम्बन्धी मिलकर दुःखी होते हैं।

कोई मांहें जनम पामे, कोई पामे मरन।
कोई मांहें हरख सों, कोई सोक रुदन।। २६ ।।

किसी का यहां जन्म हो रहा है और कोई मर रहा है। किसी के यहां खुशियां हो रही हैं। किसी के यहां दुःख से रोना हो रहा है।

खरचे खाए अहंमेवे, मांहें मोटा थाय।
दान करी कीरत कहावे, ए रामत एम रमाय।। २७ ।।

कोई अहंकार में खर्च करके अपनी महिमा कराते हैं। कोई दान करके अपनी प्रशंसा करवाते हैं। इस तरह यह खेल खेला जाता है।

कोई किरपी कोई दाता, कोई जाचक केहेवाए।
कोईना अवगुण बोले, कोईना गुण गाए।। २८ ।।

कोई कंजूस है। कोई दानी है। कोई मांगने वाले भिखारी कहलाते हैं। किसी के गुण गाते हैं और कहीं किसी की निंदा करते हैं।

कोई चढी चकडोल बेसे, तुरी गज पाएदल।
विध विधना बाजंत्र बाजे, जाणे राज नेहेचल।। २९ ।।

कोई विमान में, कोई हाथी पर, कोई घोड़े पर, कोई पैदल चलते हैं। कई तरह-तरह के बाजे बजवाकर ऐसा जानते हैं मानो उनका राज्य अखण्ड (स्थायी) है।

साम सामी थाय सेन्या, भारथ करे लोह अंग।
अहंकारे आकार पछाडे, नमे नहीं अभंग।। ३० ।।

कोई आमने-सामने सेना लाकर लोहे के वस्त्र पहनकर युद्ध करते हैं। अहंकार में आकर अपने शरीर को थका देते हैं (हरा देते हैं)। पर अपने को अखण्ड समझकर झुकते नहीं हैं।

कोई जीते कोई हारे, हरख सोक न माय।
दिसा सर्वे जीती आवे, ते प्रथीपत केहेवाय।। ३१ ।।

कोई जीतता है। कोई हारता है। किसी को अपार खुशी होती है। किसी को अपार दुःख होता है। जो सबको जीत के आ जाता है उसे पृथ्वीपति (चक्रवर्ती) राजा कहते हैं।

कोई भरया लई भाकसी, उथमे बंध बंधाय।
मार माथे पडे मोहोकम, रामत एणी अदाय।। ३२ ।।

कोई जेल में बन्द किए जाते हैं। कइयों के उलटे हाथ बांधकर लटकाया जाता है। किसी के सिर पर गुह्य मार (गुम चोट) मारी जाती है। इस तरह यह खेल की हकीकत है।

Nijanand App

जीत्या हरखे पौरसे, सूरातन अंग न माए।
हार्‌या तिहां सोक पामे, करे मुख त्राहे त्राहे।। ३३ ।।

जो अपनी ताकत से जीतते हैं उनको अपनी बहादुरी की उमंग नहीं समाती। जो हार जाते हैं उनको दुःख होता है और मुख से हाय-हाय करते हैं।

कोई मांहें रोगिया, अने कोई मांहें अंध।
कोई लूला कोई पांगला, रामत एह सनंध।। ३४ ।।

कोई रोगी है। कोई अन्धा है। कोई लूला है। कोई लंगड़ा है। इस तरह का यह खेल है।

कोई मांहें फकीर फरतां, उदम नहीं उपाय।
उदर कारण कष्ट पामे, भीखे पेट न भराय।। ३५ ।।

इस संसार में कोई फकीर बनकर घूमता है जिसे रोजी का कोई साधन नहीं। पेट भरने के लिए वह कष्ट उठाते हैं। फिर भी भीख मांगने से पेट नहीं भरता। तृष्णा बनी ही रहती है।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ८८ ।।

रामतमां वली रामत (खेल में खेल)

ए रामत मांहें जे रामतो, तेनो न लाभे पार।
ए बेखों मांहें वली बेख सोभे, स्वांग सहु संसार।। १ ।।

इस खेल में जो खेल रहे हैं उनका शुमार (गिनती) नहीं है। इन भेषों में वह अपना सुन्दर भेष बनाकर संसार में ढोंग रचते हैं।

कोई बेख जो साध कहावे, कोई चतुर सुजाण।
कोई बेख जो दुष्ट कहावे, कोई मूरख अजाण।। २ ।।

कोई साधुओं का भेष बनाते हैं। कोई चतुर ज्ञानियों वाला भेष बनाते हैं। कोई दुष्ट पापियों वाला भेष बनाते हैं और कोई मूर्ख अनजाने बनते हैं।

अनेक पगथी परव परवा, दया दान देवाय।
देखाडूं सहु करी सागर, मांहेंना मांहें समाय।। ३ ।।

कई लोग प्याऊ बनवाकर, कई रैन बसेरा बनवाकर, दया का दान देकर दानी कहलाते हैं। संसार में अपनी साहूकारी दिखाकर मन ही मन में खुश होते हैं।

अनेक देहरा अपासरा, मांहें मुनारा मसीत।
तलाब कुआ कुंड वावरी, मांहें विसामां कई रीत।। ४ ।।

कई मन्दिर, कई जैन मठ, कई गिरजाघर, कई मस्जिद, तालाब, कुआं, कुण्ड, वावरी, कई तरह की धर्मशालाएं बनवाते हैं।

कई जुगते जगन करतां, कई जुगते उपचार।
कई जुगते धरम पालें, पण हिरदे घोर अंधार।। ५ ।।

कई आचार विचार से यज्ञ करते हैं। कई रोगियों का इलाज करते हैं। इस तरह से अनेक तरीके से अपना धर्म पालते हैं (कर्तव्य करते हैं), पर उनके हृदय में अज्ञानता का घोर अन्धकार ही रहता है।

Nijanand App